भारत का राष्ट्रीय आंदोलन

कांग्रेस का जन्म

- स्थापना- 28 दिसंबर 1885
- स्थान- बम्बई गोकुलदास तेजपाल संस्कृत कॉलेज का भवन
- संस्थापक – एलेन ऑक्टेवियन ह्यूम।
- अध्यक्ष व्योमेश चंद्र बनर्जी।
- आरंभिक नाम भारतीय राष्ट्रीय संघ ।
- दादाभाई नरोजी के सुझाव पर इसका नाम भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस किया गया।
- कांग्रेस शब्द उत्तरी अमेरिका से लिया गया है अर्थ “लोगो का समूह”

कांग्रेस के उद्देश्य

- देश के विभिन्न भागों के राष्ट्रवादी राजनीतिक कार्यकर्ताओं के बीच मैत्रीपूर्ण संबंध विकसित करना।
- जाति धर्म प्रांत का भेद किए बिना राष्ट्रीय एकता की भावना को विकसित करना तथा मजबूत करना।
- जनप्रिय मांगों को निरूपित करना तथा उन्हें सरकार के सामने रखना।
- देश में जनमत को प्रशिक्षित और संगठित करना।
- भारत राष्ट्रीय निर्माण की प्रक्रिया को प्रोत्साहन देना।

- लोगों को राजनीतिक रूप से शिक्षित प्रशिक्षित करना।
- जनमत को जागृत करना।
- लोगों को सक्रिय बनाना और उन्हें राष्ट्रीय राजनीतिक मुख्यधारा में शामिल करना।

ब्रिटिश शासन की प्रकृति के प्रति समझ विकसित करना।

एक सशक्त साझा राजनीति मंच की स्थापना करना

बंगाल विभाजन

- वायसराय लॉर्ड कर्जन 20 जुलाई 1905 को बंगाल विभाजन का निर्णय लिया।
- 7 अगस्त1905 को विभाजन के विरोध में आंदोलन प्रारंभ हो गया।
- 16 अक्टूबर1905 को विभाजन प्रभावी।
- बंगाल में बिहार उड़ीसा तथा बांग्लादेश शामिल थे।
- विभाजन का प्रमुख कारण प्रशासनिक असुविधा बताया परंतु वास्तविक कारण प्रशासन ने नहीं बल्कि राजनैतिक था।

वास्तविक कारण

- बंगाल उस समय भारतीय राष्ट्रीय चेतना का प्रतिनिधि।
- बंगाल में प्रबल राजनीतिक जागृति थी जिसे दबाने के लिए बंगाल का विभाजन।
- हिंदू और मुस्लिम बाहुल्य दो भागों में बांटने और उन्हें आपस में लड़ाने की नीति अपनाई।
- फूट डालो राज करो की नीति अपनाई गई

आंदोलन का आरंभ

- 7 अगस्त 1905 को कोलकाता के टाउन हॉल में स्वदेशी आंदोलन की घोषणा की गई और बहिष्कार प्रस्ताव पारित किया गया।
- 16 अक्टूबर 1905 को बंगाल विभाजन प्रभावी हो गया।
- विभाजन के बाद बंगाल पूर्वी बंगाल और पश्चिम बंगाल मे बांटा गया।
- 16 अक्टूबर को रवीन्द्र नाथ टैगोर दवारा ने राखी दिवस के रूप में बनाया गया जिसका उददेश्य बंगाल को विभाजित कर अंग्रेज उसकी एकता में दरार नहीं डाल सकते है, को दिखाना था।

- आंदोलन का नेतृत्व महाराष्ट्र में तिलक द्वारा किया गया।
- पंजाब और उत्तर प्रदेश में अजीत सिंह लाला लाजपतराय, स्वामी श्रद्धानंद,जयपाल द्वारा किया गया।
- दिल्ली में सैयद हैदर रजा खां।,
- मद्रास में चिदंबरम पिल्ले, सुब्रमण्यम अय्यर ,आनंद चालू और टी एम नायक जैसे नेताओं ने आंदोलन का नेतृत्व किया गया।

कार्यक्रम

- विदेशी माल का बहिष्कार किया गया।
- स्वदेशी आंदोलन के प्रचार प्रसार के लिए पारंपरिक त्यौहारों धार्मिक मेले आदि का भी सहारा लिया ।
- इस आंदोलन में आत्मनिर्भरता और आत्म शक्ति का नारा दिया गया।
- स्वदेशी माल की सप्लाई के लिए स्वदेशी स्टोर खोले गए ।
- आचार्य प्रफुल्ल चंद्र राय ने बंगाल केमिकल स्टोर की स्थापना की

- आंदोलन में छात्रों की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका ।
- छात्रों द्वारा आंदोलन में मुख्य रूप से प्रतिभाग किया गया।
- सरकार द्वारा आंदोलन में छात्रों द्वारा प्रतिभाग रोकने के लिए शिक्षण संस्थानों के विरुद्ध कड़े कदम उठाने के कारण सरकारी स्कूलों का बहिष्कार किया गया और परिणाम स्वरुप राष्ट्रीय विद्यालय की स्थापना ।
- 1905रंगपुर नेशनल कॉलेज की स्थापना हुई ।
- 1906 बंगाल नेशनल कॉलेज और स्कूल की स्थापना हुई जिसके प्रिंसिपल अरविंदो घोष ।

- स्वदेशी आंदोलन का सबसे अधिक प्रभाव सांस्कृतिक क्षेत्र पर पड़ा ।
- बांग्ला साहित्य में विशेष प्रगति हुई रविंद्र नाथ टैगोर, द्विजेंद्र लाल राय, मुकुंद दास, सैयद अबू मोहम्मद के गीत प्रेरणा स्रोत बन गए।
- कला क्षेत्र में अवनीन्द्र नाथ टैगोर ने भारतीय कला से प्रेरणा ग्रहण की।
- विज्ञान के क्षेत्र में जगदीश चंद्र बोस ,प्रफुल्ल चंद्र राय की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

- स्वदेशी आंदोलन में महिलाओं ने सक्रिय रूप से भाग लिया है
- पहली बार औरतें घर से बाहर निकली प्रदर्शनों में भाग लिया और धरने पर बैठी।
- बंगाल के किसानों ने को आंदोलन प्रभावित नही कर सका।
- आंदोलन शहरों के निम्न एवं मध्यम वर्ग तक ही सीमित रह ।
- बहुसंख्यक मुसलमानों ने विशेषकर खेतिहर मुसलमानों ने इसमें भाग नहीं लिया।
- अंग्रेजों ने मुसलमानों का उपयोग संप्रदायिकता को फैलाने के लिए किया।
- ढाका के नवाब सलीम उल्ला विदेशी स्वदेशी आंदोलन के विरोध में किया गया

रोलेट एक्ट 1919

- भारत में क्रांतिकारियों के प्रभाव को समाप्त करने के लिए 1917 में सिडनी रोलेट की अध्यक्षता में एक कमेटी गठित की गई।
- भारत में किस स्तर तक क्रांतिकारी आंदोलन संबंधित षड्यंत्र फैले हैं और उनका मुकाबला करने के लिए किस प्रकार के कानूनों की आवश्यकता होगी ।
- भारतीय रक्षा कानून की अवधि समाप्त होने को थी

- विधेयक में व्यवस्था मजिस्ट्रेट किसी भी संदेहास्पद व्यक्ति को गिरफ्तार करके जेल में डाल सकता था ।
- उसे अनिश्चितकाल के लिए जेल में रख सकता था।
- बिना वकील बिना अपील तथा बिना दलील का कानून।
- कैदी को अदालत में प्रत्यक्ष उपस्थित करने के बुनियादी अधिकार को भी निलंबित करने का अधिकार रौलट एक्ट में दिया गया

- रौलट एक्ट के विरुद्ध आंदोलन गांधी जी द्वारा एक्ट के विरोध में 16 अप्रैल 1919 को एक देशव्यापी हड़ताल का आह्वान किया गया।
- सत्याग्रह सभा की स्थापना की गई जिसका उद्देश्य साहित्य का प्रकाशन वितरण एवं सत्याग्रहीओं का हस्ताक्षर तथा अहिंसक सभा का आयोजन करना था।
- दिल्ली में स्वामी श्रद्धानंद ने इस आंदोलन की बागडोर संभाली ।
- स्वामी श्रद्धानंद एवं सत्यपाल के निमंत्रण पर गांधीजी पंजाब की ओर चले परंतु मार्ग में ही हरियाणा के पलवल नामक स्थान पर उनको गिरफ्तार कर लिया ।

जलियांवाला बाग हत्याकांड 1919

- गांधीजी तथा कुछ अन्य नेताओं के पंजाब प्रवेश पर प्रतिबंध होने के कारण वहां की जनता मेंआक्रोश
- पंजाब की दो लोकप्रिय नेता डॉक्टर सतपाल एवं डॉक्टर सैफुद्दीन किचलू को अमृतसर के डिप्टी कमिश्नर द्वारा 9 अप्रैल 1919 को गिरफ्तार कर लिया गया।गिरफ्तारी का आदेश पंजाब प्रांत के लेफ्टिनेंट गवर्नर माइकल ओ डायर द्वारा दिया।
- सरकार ने 10 अप्रैल 1919 को शहर का प्रशासन सैन्य अधिकारीजनरल ओ डायर को सौंप ।
- 13 अप्रैल 1919 को बैसाखी के दिन अमृतसर जलिया बाग में एक विशाल सभा का आयोजन किया गया यह सभा हंसराज नामक व्यक्ति द्वारा बुलाई गई थी।

- दीनबंधु सीएफ एंड्रयूज ने इस हत्याकांड को जानबूझकर की गई हत्या कहा।
- रविंद्र नाथ टैगोर ने ब्रिटिश सरकार द्वारा दी गई नाइट की उपाधि वापस कर दी।
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष शंकर नायर ने वायसराय की कार्यकारिणी परिषद की सदस्यता से इस्तीफा दे दिया
- सरकार द्वारा जलियांवाला बाग हत्याकांड की जांच हेतु हंटर कमेटी 1919 का गठन किया गया।
- कांग्रेस द्वारा जलियांवाला बाग हत्याकांड की जांच हेतु तहकीकात कमेटी 1919 का गठन किया गया जिसकी अध्यक्षता मदन मोहन मालवीय थे

खिलाफत आंदोलन1919-1922

- भारतीय मुसलमान तुर्की के खलीफा को अपना धर्म गुरू मानते थे।
- प्रथम विश्व युद्ध के बाद ब्रिटेन एवं तुर्की के मध्य होने वाली सेवर्श की संधि से तुर्की के सुल्तान के समस्त अधिकार छिन गए।
- प्रथम विश्व युद्ध में भारतीय मुसलमानों ने तुर्की के खिलाफ अंग्रेजों की इस शर्त पर सहायता की वे भारतीय मुसलमानों के धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप ना करें और साथ ही उनके धार्मिक स्थलों की रक्षा करें।
- परंतु युद्ध में इंग्लैंड की विजय के बाद सरकार अपने वायदे से मुकर गई भारतीय मुसलमान ब्रिटिश सरकार से नफरत करने लगे।

- नवंबर 1919 को दिल्ली में अखिल भारतीय खिलाफत कमेटी का अधिवेशन हुआ जिसमें गांधी जी को अध्यक्ष चुना गया।
- इनकी सुझाव पर असहयोग की नीति अपनाई गई।
- भारत में खिलाफत आंदोलन मौलाना मोहम्मद अली शौकत अली हकीम अजमल खान और हसरत मोहानी एवं अबुल कलाम आजाद के सहयोग से जोर पकड़ा

- खिलाफत के मुद्दे के प्रति गांधी जी का दृष्टिकोण
- गांधीजी ने खिलाफत के मुद्दे को जन संगठन का दृष्टिकोण से देखा
- गांधीजी खिलाफत आंदोलन को हिंदू मुस्लिम एकता स्थापित करने एवं मुसलमानों को राष्ट्रीय आंदोलन में लाने का सुनहरा अवसर मानते थे ।
- तुर्की के मुद्दे को बैध मुद्दा मानते थे चुकी ब्रिटिश प्रधानमंत्री ने वायदा किया था।

- **<u>खिलाफत आंदोलन की समाप्ति-</u>**
- असहयोग आंदोलन के स्थगित हो जाने के बाद खिलाफत आंदोलन भी अप्रासंगिक बन गया।
- तुर्की की जनता मुस्तफा कमाल पाशा के नेतृत्व में उठ खड़ी हुई और उसने नवंबर 1922 में सुल्तान को सत्ता से वंचित कर दिया।
- कमाल पाशा ने तुर्की के आधुनिकरण के लिए अनेक कदम उठाए तथा खलीफा का पद समाप्त कर दिया।

असहयोग आन्दोलन 1920-1922

- **असहयोग आंदोलन के कारण-**
- प्रथम विश्व युद्ध के बाद महंगाई बढ़ी, खाद्यान्नों की कमी और मुद्रास्फीति बढ़ गई थी।
- 1919 का रौलट एक्ट जिसने क्रांतिकारी गतिविधियों को दबाने के मौलिक अधिकार का हनन किया।
- जलियांवाला बाग हत्याकांड तथा पंजाब में मार्शल लॉ लगाना और एवं हंटर कमेटी की रिपोर्ट में भेदभाव पूर्ण सिफारिश होना।
- 1919 का अधिनियम तथा उसे मोहभंग होना और इसमें आत्मनिर्भरता तथा राहत देने के बदले में सरकार ने दोहरा शासन की नीति को प्रस्तावित किया।
- खिलाफत आंदोलन।

- सितंबर 1920 में को कांग्रेस के कोलकाता के विशेष अधिवेशन में लाला लाजपत राय की अध्यक्षता में असहयोग आंदोलन को स्वीकार कर लिया गया।
- इस आंदोलन का सबसे प्रमुख विरोध सी आर दास ने किया उनका विरोध विधान परिषदों के बहिष्कार को लेकर था।
- कांग्रेस का नेता जिनमें मोहम्मद अली जिन्ना एनी बेसेंट विपिन चंद्र पाल एवं जीएस खरपड़े ने इसका विरोध किया और कांग्रेस छोड़ दी।
- दिसंबर 1920 में नागपुर के कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशन में असहयोग आंदोलन का प्रस्ताव अंतिम रूप से पारित किया गया

- सितंबर 1920 में कोलकाता अधिवेशन में असहयोग का प्रस्ताव पारित हुआ जिसमें।
- सरकार से प्राप्त उपाधियां व सम्मान वापस करें।
- सरकारी शिक्षण संस्थानों अदालतों और विधान मंडलों का बहिष्कार करें।
- विदेशी वस्त्रों का त्याग करें जनता को सरकारी नौकरी से इस्तीफा देने व कानून की अवज्ञा जिसमें कर अदायगी न करना भी शामिल हो के लिए कहा जा सकता था।
- हाथ से सूत काटना और बुनकर खादी का इस्तेमाल करना।
- राष्ट्रीय विद्यालय व महाविद्यालय की स्थापना करना

- कांग्रेस के दिसंबर 1920 के नागपुर अधिवेशन में असहयोग का प्रस्ताव सीआर दास द्वारा प्रस्तुत किया गया।
- कांग्रेस के संविधान का जो कि लक्ष्य ब्रिटिश साम्राज्य के भीतर स्वशासन था उसकी स्थान पर स्वराज्य का लक्ष प्रस्तावित किया गया
- कांग्रेस संगठन में क्रांतिकारी परिवर्तन किए गए तथा रचनात्मक कार्यक्रम तैयार किए गए।
- सभी वयस्कों को कांग्रेस की सदस्यता प्रदान करना।
- 300 सदस्यों वाली अखिल भारतीय कांग्रेस समिति का गठन।
- हिंदुओं में अस्पृश्यता का निवारण।
- हिंदू मुस्लिम एकता का संवर्धन।
- यथा संभव हिंदी का प्रयोग
- भाषाई आधार पर प्रांतीय कांग्रेस समितियों का पुनर्गठन करना।
- जिला तालुका तथा ग्राम स्तर पर कांग्रेस समितियों की स्थापना

- असहयोग आंदोलन का प्रारंभ गांधी जी ने 1 अगस्त 1920 को आरंभ किया।
- इसमें आंदोलन में कई मुस्लिम नेताओं ने भी साथ दिया जिसमें मौलाना अबुल कलाम आजाद मोहम्मद अली शौकत अली डॉक्टर अंसारी।

आन्दोलन के दौरान कार्यक्रम

- आंदोलन की शुरुआत गांधी जी द्वारा अपनी केसर ए हिंद की उपाधि वापस करके की।
- वकीलों ने अपनी वकालत छोड़ दी।
- विद्यार्थियों ने स्कूल एवं कॉलेजों को छोड़ दिया और अनेक राष्ट्रीय शिक्षण संस्थानों की स्थापना हुई।
- बिहार में सरकारी भूमि पर पशुओं को चराने पर दिए जाने वाले कर का बहिष्कार किया गया।
- संयुक्त प्रांत में किसान इस आंदोलन से जुड़ गए।

- पंजाब में अकाली आंदोलन चला।
- असम में चाय बागान मजदूरों ने हड़ताल की।
- राजस्थान में किसान एवं आदिवासियों ने आंदोलन चलाया
- आंध्र प्रदेश में वन कानून के खिलाफ आंदोलन चलाया।
- महाराष्ट्र में आंदोलन को अपेक्षाकृत अधिक सफलता नहीं मिली।
- इस तरह यह आंदोलन अखिल भारतीय स्वरूप धारण कर लिया

- 1 फरवरी 1922 को गांधी जी द्वारा घोषणा की गई कि यदि 7 दिन के अंदर राजनीतिक बंदियों को रिहा नहीं किया गया एवं प्रेस पर से प्रतिबंध नहीं हटाया गया तो वे करो की अदायगी समेत सामूहिक रूप से बारदोली में एक सविनय अवज्ञा आंदोलन छेड़ देंगे ।
- लेकिन 5 फरवरी 1922 को गोरखपुर के चोरी चोरा नामक स्थान पर घटना के कारण 12 फरवरी 1922 को गांधी जी द्वारा असहयोग आंदोलन को स्थगित कर दिया गया।